पाठ–19

कोशिश करके देख लें

यह आँख मिचौली खेल है। आप भी यह खेल अक्सर खेलते ही होंगे। कितना मजा आता है पट्टी बँधे साथी को छेड़ने में। वह इधर जाता है, उधर जाता है पर पकड़ नहीं पाता। पर जब आप की आँखों पर पट्टी बँधी होती है तो पसीना छूट जाता है। जिनकी आँख पर पट्टी बँधी होती है उसे बाकी साथी आवाज दे–देकर इधर–उधर भगाने की कोशिश करते हैं। बहुत बार पट्टीवाला साथी गिरते–गिरते बचता है, इस तरह इस खेल में बहुत मजा आता है। आप सबने यही खेल कई–कई बार खेला होगा।

1. **जब आपकी आँखों पर पट्टी बँधी होती है और आप साथियों को पकड़ने का प्रयास करते हैं तो आपको कैसा लगता है?**

_____

_____

2. **उस समय आप क्या–क्या सोचते हैं?**

_____

_____

3. आपको कैसे पता लगता है कि आपके साथी कहाँ हैं?

_____

_____

4. क्या आप आवाज से कौन दोस्त हैं, किस तरफ हैं, कितनी दूरी है, पता कर पाते हैं?

_____

_____

5. इस खेल में आपको सबसे अच्छा क्या लगता है?

_____

_____

6. यदि आपकी आँखों पर पट्टी बाँध दी जाये तो आप क्या–क्या नहीं कर पाएँगे?

_____

_____

_____

दुनियाभर में बहुत से व्यक्ति ऐसे होते हैं जो देख नहीं पाते हैं लेकिन वे छूकर व महसूस करके वे सभी कार्य कर लेते हैं। कोई उन्हें जबरदस्ती सहारा दे तो वे नाराज हो जाते हैं। जब कभी उन्हें मदद की जरूरत होती है तो वे माँग लेते हैं। ऐसे व्यक्ति सभी तरह का कार्य कर लेते हैं जो कोई भी व्यक्ति कर लेता है और उन्हें कभी कोई दिक्कत नहीं आती है यही नहीं ऐसे व्यक्ति पढ़–लिखकर आज कई तरह के कार्य करते हैं।

7. आपके आस–पास इस तरह के व्यक्ति होंगे जिन्हें दिखाई नहीं देता है?वे अपना काम कैसे करते हैं? पता करके लिखिए।

_____

_____

_____

देख नहीं सकते किन्तु पढ़ सकते हैं :

जो लोग देख नहीं पाते हैं वे चीज़ों की पहचान आवाज़, गंध एवं छूकर करते हैं। उनकी ये सब क्षमताएँ अभ्यास से बहुत पैनी हो जाती हैं। वे बहुत कुछ महसूस कर पाते हैं। उनके पढ़ने के लिए एक विशेष प्रकार की लिपि है इसे ''ब्रेल लिपि'' के नाम से जाना जाता है। ब्रेल लिपि से पढ़ने एवं लिखने के लिए अक्षरों को उभारकर बिन्दु के रूप में लिखा जाता है।

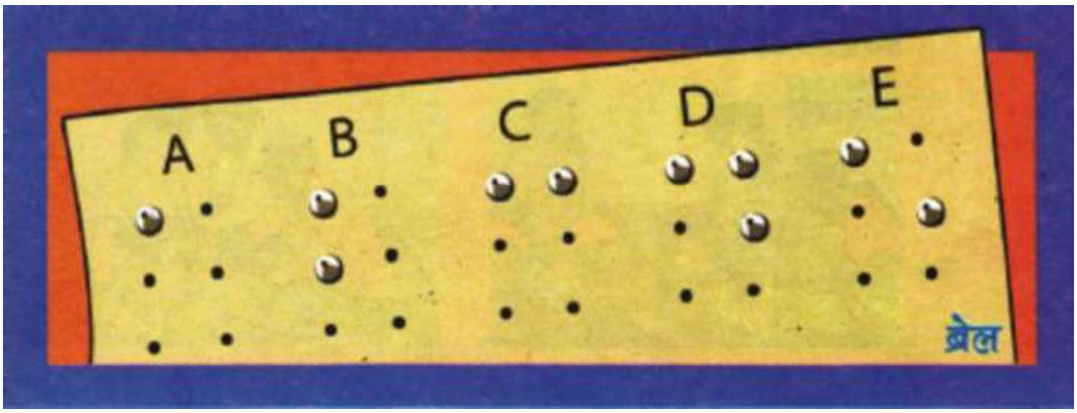

ब्रेल लिपि की खोज करनेवाले 'लुई ब्रेल'' भी आँखों से देख नहीं पाते थे। चोट लगने से बचपन में उनकी आँखें खराब हो गई थीं।

शैलेन्द्र की पहियोंवाली कुर्सी

शैलेन्द्र स्कूल से आने के बाद खिड़की के पास बैठकर ड्राइंग बनाता रहता है उसकी माँ कहती वह सबसे अच्छी ड्राइंग बनाता है एक दिन उसके पिताजी उसके लिए पहियोंवाली कुर्सी ले आये। शैलेन्द्र ने जल्दी ही अपनी कुर्सी को आगे पीछे घुमाना सीख लिया। अब वह अपने घर में कहीं भी आ जा सकता है। एक दिन उसके पिताजी उसे घर के पास एक बगीचे में ले गये जहाँ कुछ बच्चे बॉल से खेल रहे थे शैलेन्द्र उन बच्चों को खेलते हुए देख रहा था, इतने में उसके पास बॉल आई। उसने बॉल को पकड़ लिया व उठाकर फेंक दी। वह बैठा–बैठा बच्चों को खेलते देख रहा था, कि एक बच्चा उसके पास आया और बोला, तुम भी खेलोगे? शैलेन्द्र ने खुशी से सिर हिलाया। बच्चों ने बातचीत की और उसे भी खेल में शामिल कर लिया।

8. उन बच्चों ने शैलेन्द्र को कैसे खेलाया होगा?

_____

_____

9. आप शैलेन्द्र को अपने साथ और क्या–क्या खेल खेला सकते हैं?

_____

_____

10. कैसे खेलाएँगे?

_____

_____

11. शैलेन्द्र अपने घर में क्या–क्या करता होगा?

_____

_____

_____

संकेतों की भाषा

आपस में बात करने के लिए हम अक्सर शब्दों का प्रयोग करते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि हम बिना बोले ही किसी को इशारे से बुला लेते हैं। ये इशारे अलग–अलग तरह के भी होते हैं और एक जैसे भी। आपको यह शायद पता नहीं होगा कि संकेतों की एक सम्पूर्ण भाषा है। हमारे आस–पास बहुत से ऐसे लोग हैं जो संकेतों की भाषा का उपयोग करते हैं कुछ लोग जो बोल नहीं सकते वे संकेतों की भाषा का उपयोग करके सभी तरह की बातचीत कर सकते हैं। इसमें हाथों व उँगलियों का भरपूर उपयोग होता है। संकेतों व इशारों

पर आधारित समाचारों का प्रसारण टेलीविजन पर भी किया जाता है। इस तरह की भाषा का उपयोग करते हुए लोग दुनियाभर की जानकारी का आदान–प्रदान करते हैं।

12. यदि बिना बोले ही नीचे दिए गए कार्यों को करना हो तो आप उन्हें कैसे करेंगे?

(i) मेहमान का अभिवादन।

———————————————————————————————

(ii) दोस्तों को अपने पास बुलाना।

———————————————————————————————

(iii) पानी का गिलास माँगना।

———————————————————————————————

(iv) खेलने के लिए साथियों को बुलाना।

———————————————————————————————

CCC